CHAPTER 3 , अतीत में दबे पाँव

PAGE 52, अभ्यास

12:1:3:अभ्यास:1

सिंधु-सभ्यता साधन-सपन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडबर नहीं था। कैसे?

उत्तर: सिंधु सभ्यता पर अब तक के अध्ययन, खोज और खुदाई में मिले शहर के अवशेष और मूर्तियों के अनुसार, यह ज्ञात होता है कि सिंधु सभ्यता एक संसाधन संपन्न सभ्यता थी लेकिन इसमें राज्य सत्ता या धर्म के संकेत नहीं मिलते हैं। मुहरों ,वास्तुकला की एकरूपता, पानी की व्यवस्था और जल निकासी व्यवस्था, सफाई और सामाजिक व्यवस्था आदि में अनुशासन ये कहा जा सकता है की ये एक उन्नत सभ्यता थी। राजशाही और धर्म की ताकत दिखाने वाली भव्यता का कोई प्रदर्शन नहीं है। अन्य सभ्यताओं में, इन बलों को दिखाने के लिए भव्य महलों, मंदिरों और मूर्तियों का निर्माण किया गया था, लेकिन सिंधु-घाटी सभ्यता की खुदाई में, छोटी मूर्तियों, खिलौनों, मिट्टी के बर्तनों और नौकाओं आदि मिली है,

जो ताज "राजा" के सर पर रखा गया था वह भी छोटा है, अर्थात यह प्रभुत्व या दिखावे को कहीं नहीं दर्शाता है। इसके अतिरिक्त यहाँ जो भी मिला उससे ये पता चलता हैं की पहले से ही ये उत्कृष्ट, पूर्ण-संगठित और विकसित शहरी सभ्यता थी ।

12:1:3:अभ्यास:2

“सिंधु-सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्य-बोध हैं जो राज-पोषित या धर्म-पोषित न होकर समाज-पोषित था। ऐसा क्यों कहा गया?

उत्तर: सिंधु-घाटी-सभ्यता मानव-सभ्यताओं में सबसे विकसित और उत्कृष्ट हैं और ये सम्भवतः इसकी खूबियों के कारण है।सिंधु-सभ्यता का आधार और उद्देश्य सामाजिक विकास और सामाजिक व्यवस्था दोनों ही थे। सिंधु-घाटी के लोगों के बीच धर्म और राजनीति का कोई विशेष प्रभाव देखने को नहीं मिला है। सिंधु-घाटी-सभ्यता में कला का ज्यादा महत्व था। वास्तुकला या नगर विकास के अलावा, धातु और पत्थर की मूर्तियां, मृदु - भांड, पत्थरों पर अंकित मनुष्यों, वनस्पतियों

और जीवों की तस्वीरें, अच्छी तरह से बनाए गए है। सिंधु-घाटी-सभ्यता में राज सत्ता और धर्म सत्ता के कोई ठोस सबूत नहीं मिले है , जहाँ अन्य सभ्यताओं में राजशाही और धर्म की ताकत दिखाने वाली ताकतों को दिखाने के लिए शानदार महलों, मंदिरों और मूर्तियों का निर्माण किया गया था, लेकिन सिंधु-घाटी सभ्यता खुदाई में, छोटी मूर्तियां, खिलौने, मिट्टी के बर्तन और नावों के अलावा कोई ऐसे अवशेष नहीं मिले हैं, यहाँ तक कि "राजा" के सिर पर जो मुकुट रखा गया था वह भी अकार में छोटा है, इस लिए वह प्रभुत्व या दिखावे का प्रदर्शन नहीं करता है, इसके अलवा आम आदमी की जरूरत को पूरा करने के लिए यहां सब कुछ है। लेकिन कुछ भी ऐसा नहीं है जिससे राजनीतिक और धार्मिक व्यवस्था के विशेष प्रभाव को उजागर करे यहाँ कि सभी वस्तुओ पर आम नागरिको का अधिकार था।

अतः ये कथन बिलकुल सत्य है कि सिन्धु-सभ्यता की खूबी उसका सौन्दर्य बोध है। जो राज पोषित या धर्म पोषित ना होकर समाज पोषित है

12:1:3:अभ्यास:3

पुरातत्व के किन चिहनों के आधार पर आप यह कह सकते हैं कि-‘सिंधु-सभ्यता ताकत से शासित होने की अपेक्षा समझ से अनुशासित सभ्यता थी?”

उत्तर: सिंधु-घाटी-सभ्यता की नगर नियोजन और प्रणाली अपने आप में एक बहुत ही उन्नत और विकसित सभ्यता का प्रमाण देती है। यहाँ 'ताकत' मतलब राज-शक्ति या धर्म शक्ति ,जो एक राजा या महंत द्वारा शासित होता है और उसके प्रदर्शन में, वे "महल या विशाल मंदिर और मूर्तियों का निर्माण कराते हैं"। परन्तु इस सभ्यता में न तो महल या मंदिर है और न ही राजा और महंतों की कब्रें हैं, मोहन-जोदड़ो के "राजा" का मुकुट भी छोटा है, और इसका मतलब है कि उस समय 'नरेश 'ताकत का संकेत ना होकर समाज और उसकी प्रणाली का एक मजबूत हिस्सा रहा होगा। और जो कुछ यहां पाया गया है, उससे यह स्पष्ट है कि यह आम आदमी के हितों को ध्यान में रखते हुए बहुत सुनियोजित और नियोजित तरीके से बनाया गया होगा। खाद्य भंडारण, जल निकासी, पानी की आपूर्ति प्रणाली, शहर की योजना, वास्तुकला, स्वच्छता, मुहरों, टिकटों, और सामाजिक व्यवस्था सभी में एकरूपता है, जो एक अनुशासित और व्यवस्थित

"समझ" को दर्शाती है। और ये ऐसे आधार हैं जिसके द्वारा विद्वानों का मानना है कि "सिंधु-सभ्यता समर्थता शक्ति द्वारा शासित होने के बजाय समझ द्वारा अनुशासित सभ्यता थी।

12:1:3:अभ्यास:4

'यह सच है कि यहाँ किसी अगन की टूटी-फूटी सीढ़ियाँ अब आपको कहीं नहीं ले जातीं; वे आकाश की तरफ अधूरी रह जाती हैं। लेकिन उन अधूरे पायदानों पर खड़े होकर अनुभव किया जा सकता है कि आप दुनिया की छत पर हैं, वहाँ से आप इतिहास को नहीं, उसके पार झाँक रह हैं।" इस कथन के पीछ लखक का क्या आशय हैं?

उत्तर:' 'सिंधु-घाटी-सभ्यता': दुनिया की सबसे बड़ी सभ्यताओं में से एक। लेखक के इस कथन का अर्थ है कि इन टूटी - फूटी हुई सीढ़ियों पर खड़े होकर आप इतनी महान सभ्यता देख सकते हैं, जो सभ्यता काल्पनिक ना होकर एक अनुशासित सभ्यता है। यहाँ के घरों की सीढ़ियाँ उस काल और उससे पहले का एहसास कराती हैं जब यह सभ्यता अपने

चरम पर रही होगी तब यह सभ्यता दुनिया की सबसे विकसित पुरानी सभ्यता रही होगी। खंडहर से मिले टूटे-फूटे घरो केअवशेष मानवता के लक्षण और मानव जाति के क्रमिक विकास को दर्शाते है। उन अधूरे पायदानों पर खड़े होकर सीखने के लिए कितना कुछ है, उस समय की अनूठी शहर योजना, उस समय का ज्ञान, उसके द्वारा स्थापित मानदंड ,उस समय की वास्तुकला हमारे लिए अनुकरणीय हैं। दुनिया की छत पर होना एक गर्व की अनुभूति है, इसका मतलब है कि हजारों साल पहले हम इतने उन्नत थे, कि सभ्यता के नाम पर हम दुनिया में सबसे ऊपर हैं अर्थात हमें दुनिया की छत पर होने पर गर्व हो सकता है, इन सीढ़ियों पर चढ़ कर हम इतिहास नहीं बल्कि सिंधु सभ्यता के सभी मानवो और उनकी विकसित सभ्यता को देखना चाहते है ।

12:1:3:अभ्यास:5

टूटे-फूटे खडहर, सभ्यता और सस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती जिंदगियों के अनछुए समयों का भी दस्तावेज होते हैं।”-इस कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: टूटे- फूटे हुए खंडहर सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कते जीवन के अछूते समय का भी दस्तावेजीकरण प्रस्तुत करते हैं। ये खंडहर उस समय की संस्कृति का परिचय देते हैं। आज भी हम वहां किसी भी घर के खँडहर पीछे पीठ टिका कर आराम कर सकते हैं। शहर के सुनसान रास्ते पर खड़े होकर बैलगाड़ी की आवाज महसूस कर सकते हैं। इस प्रकार नगर-नियोजन, धातु और पत्थर की मूर्तियां, मिट्टी के बर्तन, उन पर आकृतियों, मुहरों, बारीकी से चित्रित चित्रों को देखकर ऐसा लगता है मानो उस युग के मनुष्य अभी भी इधर-उधर हैं, इन सभी का जीवंत एहसास आज भी हमें महसूस होता है कि ये सभी इतिहास के दस्तावेज होने के साथ-साथ जीवन की धड़कन भी हैं। जो हमारे सामने बिते हुए अनछुए समय को प्रस्तुत करते हैं।

12:1:3:अभ्यास:6

इस पाठ में एक ऐसे स्थान का वर्णन हैं जिसे बहुत कम लोगों ने देखा होगा, परंतु इससे आपके मन में उस नगर की एक तसवीर बनती है। किसी ऐस ऐतिहासिक स्थल, जिसको आपने नजदीक से देखा हो, का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर - विद्यार्थी खुद द्वारा भ्रमण किये गए ऐतिहासिक स्थलों के अनुभव द्वारा पाठ के आधार पर खुद लिखे ।

12:1:3:अभ्यास:7

नदी, कुएँ स्नानागार और बेजोड़ निकासी व्यवस्था को देखते हुए लखक पाठकों स प्रश्न पूछता है कि क्या हम सिंधु घाटी सभ्यता को जल-सस्कृति कह सकते हैं? आपका जवाब लखक के पक्ष में है या विपक्ष में? तर्क दें।

उत्तर: मोहन-जोदड़ो के पास बहती सिंधुंनदी , स्नानागार, शहर में कुओं,और बेजोड़ जल निकासी प्रणाली, को देख कर ही लेखक ने सिंधु घाटी सभ्यता को जल संस्कृति कहा है,

और मैं इस कथन से पूरी तरह से सहमत हूं। निम्नलिखित कुछ विशिष्ट बिंदु हैं जो इस बात कि पुष्टि करते हैं:

1. मोहन-जोदड़ो के प्रत्येक घर में एक स्नानागार था। घर के अंदर से निकलने वाला पानी या गंदा पानी नालियों के माध्यम से, फिर बड़ी नदियों में जाता था। कहीं - कहीं नालियाँ ऊपर से खुली होती हैं लेकिन अधिकांश नालियाँ ऊपर से बंद होती हैं।

2. उनकी जल निकासी प्रणाली बहुत सर्वोच्च और उत्तम थी।

3. शहर में हर तरफ कुएँ मिले है यहाँ कुएँ को पक्की ईंटों से बनाया जाता था। अकेले मोहनजो-दाडो में सात सौ कुएँ मिले हैं।

4. इस नगर में एक महाकुंड भी मिला है जो लगभग चालीस फीट लंबा और पच्चीस फीट चौड़ा है।

12:1:3:अभ्यास:8

सिंधु घाटी सभ्यता का कोई लिखित साक्ष्य नहीं मिला है। सिर्फ अवशेषों के आधार पर ही धारणा बनाई गई है। इस लेख में मुअनजो-दड़ो के बारे में जो धारणा व्यक्त की गई है क्या

आपके मन में इससे कोई भिन्न धारणा या भाव भी पैदा होता है? इन सभावनाओं पर कक्षा में समूह-चर्चा करें।

उत्तर : सिंधु घाटी सभ्यता की जानकारी हमें गर्म, अज्ञात और अन्य क्षेत्रों की खुदाई से मिले अवशेषों से मिली है। खुदाई में हमें मोहन -ज -दाढ़ो शहर की योजना, मकान, खेती, कला, जल संग्रह और जल निकासी ,खिलौंने आदि के अवशेष मिले हैं। इनके आधार पर, ही ये धारणा बनाई गई है कि यह सभ्यता अत्यधिक विकसित थीऔर यह अनुमान लगाया गया है कि आज की शहरी योजना की तुलना में यहाँ नगर नियोजन और वास्तुकला अधिक विकसित थी यहाँ कोई रेगिस्तान नहीं था, कृषि उन्नत स्थिति में थी, पशुपालन और व्यापार भी विकसित था। समाज के दो वर्गों की परिकल्पना "उच्च वर्ग" और "निम्न वर्ग " आदि के रूप में की गई थी। मोहन -ज -दाढ़ो के बारे में अवधारणा निम्नलिखित है -

१. इस सभ्यता की खुदाई में जो लिपि मिली है वो चित्रलिपि हैऔर कोई भी आज तक इन लिपियों को पढ़ नहीं पाया है। अता यह लिपि अपने आप में छिपी है।

२. मिले हुए अवशेष इस सभ्यता और संस्कृति के बारे में बताते हैं यदि लिपि स्पष्ट नहीं पढ़ी जा सकती है तो हमें यहाँ पर मिले अवशेषों के माध्यम से ही जानकारी मिलती है कि ये सभयता कितनी उन्नत थी। ये बात सही है कि इतनी पुरानी सभ्यता के सभी संकेत सुरक्षित नहीं हो सकते। लेकिन इस क्षेत्र के जलवायु और मजबूत निर्माण के कारण, बहुत सारे अवशेष सही स्थिति में पाए गए हैं। कर्ण सभ्यता और संस्कृति की परिकल्पना उन्हीं के आधार पर की गई है।